Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

समकालीन हिन्दी उपन्यासकारों की द्रष्टि में समाज, धर्म और सम्प्रदाय

Manoj Bala Chauhan[1]* Dr. Harish Chandra Pathak[2]

[1] Young Scientists University

[2] Retd. Prinicipal at Government Degree College, Devprayag University, Tehri Garhwal, Uttrakhand

सार – ***भारत एक ऐसा देश है जहां धार्मिक विविधता और धार्मिक सहिष्णुता को कानून तथा समाज, दोनों द्वारा मान्यता प्रदान की गयी है। भारत के पूर्ण इतिहास के दौरान धर्म का यहां की संस्कृति में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। भारत विश्व की चार प्रमुख धार्मिक परम्पराओं का जन्मस्थान है - हिंदू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म तथा सिक्ख धर्म। भारतीयों का एक विशाल बहुमत स्वयं को किसी न किसी धर्म से संबंधित अवश्य बताता है।***

----------X----------

प्रस्तावना

समकालीन शब्द बड़ा ही भ्रामक शब्द है| इसकी समय-सीमा को निर्धारित कर पाना आसान कम नहीं है, क्योकि एक ओर इसके साथ "काल" शब्द जुड़ा हुआ है, तो दूसरी तरफ "सम" शब्द भी है| एक ओर "समकालीन" शब्द कल सापेक्ष है, तो दूसरी ओर विधा के अनुरूप इसकी समय-सीमा को घटने-बढानें की स्थिति भी प्राप्त होती है| सांप्रदायिकता को ध्यान में रखते हुए समकालीनता के घटाने-बढाने की स्थिति भी प्राप्त होती है| सांप्रदायिकता को ध्यान में रखते हुए समकालीनता के लिए 1960 के बाद का समय समय-सीमा के रूप में स्वीकार करना होगा| यह समय भारत के लिए राजनीतिक-सामाजिक द्रष्टि से महत्वपूर्ण रहा है| सांप्रदायिकता के नजरिये से 1960 के बाद बड़ी तेजी से धुर्विकर्ण की संकीर्ण राजनीती ने भारतीय समाज में अपने पैर पसारने सुरु किये| तत्काल इसके परिणाम भले ही ज्यादा घातक न रहे हो, लेकिन इसके दूरगामी परिणाम अत्यंत ही घटक निकले| एक ओर हिन्दुत्ववादी शक्तियों का उभार देखने को मिला दूसरी ओर दलितों और अल्पसंख्यको को लेकर राजनीतिक खेल खेले जाने लगे| क्षेत्रीयतावादी शक्तियां भी इस दौर में खड़ी हुई| आरक्षण के लिए हिंसक आन्दोलन भी हुए| राजनीतिक दलों ने इन मौका का लाभ उठाया और हर जायज-नाजायज मांगो को समर्थन दिया| इन परिस्थितियों ने भारतीय समाज को कई टुकड़ो में विभाजित कर दिया है|

साहित्य की समीक्षा-

समकालीन भारतीय समाज में साम्प्रदायिकता एक गम्भीर समस्या के रूप में उभरी है| इसलिए इस पर विस्तृत चिंतन करने की आवश्यकता है| अत: धर्म और संप्रदाय के आपसी संबंध पर विचार करते हुए साम्प्रदायिकता तथा धर्म पर भी विचार करना जरुरी है| राष्ट्राबाद और साम्प्रदायिकता को प्राय: एक ही सिक्के के दो पहलु के रूप में देखा जाता है| ऐसे में यह देखना आवश्यक है, की राष्ट्रवाद का साम्प्रदायिकता के साथ क्या संबंध है| किसी भी समाज पर साहित्य का गहरा प्रभाव होता है, साथ ही साहित्य भी समाज में आये परिवर्तनो से प्रभावित हुए बिना नही रह सकता|

धर्म, साम्प्रदायिकता और समाज:-

समाज विज्ञान ने मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी के रूप में परिभाषित किया है| धर्म यदि समाज का एक प्रमुख हिस्सा है, तो समाज भी धर्म का एक प्रमुख हिस्सा है| दोनों एक दुसरे पर अन्योन्याश्रित है| समाज में धर्म की आवश्यकता यदि इसलिए है, कि इसके माध्यम से व्यवस्था बनायीं जा सकती है या बनायीं जाती है| वही दूसरी ओर समाज धर्म के लिए वह स्त्रोत है, जिससे धर्म को खाद-पानी मिलता है| कहने का तात्पर्य यह है, कि समाज के माध्यम से धर्म अपने लिए अनुययियो को प्राप्त करता है| साथ ही अधिक से अधिक अनुयायी बनाने के लिए अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए धर्म को समाज के उन

www.ignited.in

व्यक्तिओ के साथ जुड़ना पड़ता है, जिनका समाज पर दबदबा हो|

समाज में धर्म द्वारा स्थापित मान्यताओ का ही पालन किया जाता है| समाज में क्षेष्ठ मानव के लिए धर्म द्वारा कुछ मूल्यों का निर्धारण किया गया है| चाहे वह वैयक्तिक स्तर पर हो या सामूहिक स्तर पर हर एक के लिये समाज में क्षेष्ठ मानव के लिए मूल्य स्थापित किये गए| इन मूल्यों का निर्धारण समाज में व्यवस्था बनाने के लिए किया गया| इन नियमो एवं नीतियों का निर्धारण समाज में मनुष्य के व्यवहार को निर्धारित करने के लिए किया गया | जो इन नियमो का पालन करेगा वही समाज में स्थान पाने योग्य है, और जो इन नियमो का उल्लंघन करेगा उसे समाज से निकल दिया जायेगा | इसका कारण यह है, कि एक और जंहा वह समाज में अव्यवस्था फैला सकता है, वही दूसरी ओर धर्म की एकछत्र सट्टा को चुनौती भी दे सकता है|

इसके जड़ो की तलाश आधुनिक युग में ही करनी होगी मुख्य रूप से 1857 के ग़दर के बाद से| प्रसिद्ध इतिहासकार असगर अली इंजीनियर इस संबंध में कहते है, "यह समझना जरुरी है कि साम्प्रदायिकता आधुनिक कल की परिघटना है और इसका मूल कारण राजनीतिक सत्ता व सरकारी नौकरियो में हिस्सेदारी है, न कि धर्म"| धीरे-धीरे साम्प्रदायिकता भारतीय समाज में भयानक रूप ग्रहण करती गई| अब एक क्षण के लिए ऐसा महसूस होने लगता है, कि साम्प्रदायिकता का खत्म ही नही होगा|

धर्म जब संस्थापक रूप धारण कर लेता है, तब उसमे विकृति आ जाती है| जब दो संस्कृतियाँ आपस में मिलती है, तो वे परस्पर मिलन से समर्द्ध भी होती है| उदाहरण:- स्वरूप हम यह कह सकते है, कि जब इस्लाम का भारत में आगमन हुआ तो मुख्य रूप में वे आक्रमणकारी ही थे, लेकिन जब उन्होंने हिंदुस्तान को अपना वतन समझ कर अपनाया तो यंहा के मुख्य धर्म (हिन्दू धर्म) को भी आदर का स्थान दिया| हिंदुस्तान पर आक्रमण इस्लाम के प्रचार-प्रसार के लिए नही किया गया था| जिसके साथ साधारण जनता का कुछ भी लेना-देना न था| वह तो आम हिन्दू जनता के साथ मिल-जुलकर रहा करती थी, बिल्कुल गंगा-जमुना की तरह| निश्चित रूप से जब ये दोनों धर्मावलम्बी एक साथ जीवन यापन कर रहे थे, तो एक-दुसरे की संस्कृति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते थे| हिन्दू संस्कृति से कई चीजे आयातित कर ली गई है, और वे कुछ इस प्रकार से घुल-मिल गई है, कि अब इन्हे अलग कर पाना तो दूर की बात है, इनकी पहचान कर पाना भी कठिन है| कुछ ऐसा ही हल मुस्लिम संस्कृति का भी है| ऐसे में निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है, कि जंहा एक ओर हिन्दू संस्कृति समर्द्ध हुई है, वही मुस्लिम संस्कृति भी सम्रद हुई है|

उपसंहार:-

भारत के विभाजन से पहले और विभाजन के बाद के समय और समाज में काफी परिवर्तन आ चूका था| स्वाभाविक रूप से इसका प्रभाव भारतीय जनमानस पर भी पड़ा| कोई भी रचनाकार समाज से कटकर नही रह सकता| कोई भी कालजयी रचना नही हो सकती, जिसमे किसी न किसी रूप में समाज का चित्रण न किया गया हो| विभाजनोपरान्त परिस्थितियो ने रचनाकार के मानस को भी निश्चित ही प्रभावित किया है| उत्तरोतर बढती हुई सांप्रदायिकता ने रचनाकार को धर्म, समाज, संप्रदाय, पारिवारिक रिश्ते, धर्म से इतर इंसानियत के आधार पर बनने बाले रिश्तो पर पुनविचार करने के लिए बाध्य किया| ऐसे में रचनाकार के द्रष्टिकोण में धर्म, संप्रदाय, समाज इत्यादि को देखने और परखने के नजरिये का विश्लेषण करना आवश्यक है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आरिफ, मो. उपयात्रा राधा कृष्णा प्रकाशन नई दिल्ली 2006
2. कमलेश्वर राजपाल एंड संज 2007
3. गुजराल, तरसेम "जलता हुआ गुलाव" वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2002
4. प्रेमचंद्र "रंगभूमि" प्रकाशन संथान, नई दिल्ली 2008
5. रजा, राही मासूम "आधा गाँव" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2004

Corresponding Author

Manoj Bala Chauhan*

Young Scientists University

www.ignited.in